....सलामत रहे दोस्ताना हमारा!

यह नील नाम के मगरमच्छ और मिस्र के एक पक्षी प्लोवर की दोस्ती की कहानी है।

ये मगरमच्छ अफ्रीका के उष्णकटिबन्धीय इलाके में रहते हैं। प्लोवर को मगरमच्छ पक्षी के नाम से भी जाना जाता है।

यह मगरमच्छ नदी किनारे मुँह खोलकर दिन भर बैठा रहता है – गरमी से राहत पाने के लिए। भोजन की तलाश में प्लोवर खुले मुँह में घुस जाता है। वह मगरमच्छ के दाँतों के बीच फँसे सड़ते माँस के टुकड़ों को बटोर-बटोर कर खाता है। पर मगरमच्छ उसको नहीं खाता है।

इस प्रकार मगरमच्छ के दाँतों की सफाई हो जाती है और प्लोवर को पेट भर खाना मिल जाता है। दो जीवों के इस तरह मिल-जुलकर रहने को सहजीविता कहते हैं।

दर्जिन का आशियाँ

फोटोः शमशेर अहमद खान

दर्जिन (टेलर बर्ड) दो-तीन बड़ी पत्तियों को बड़ी सफाई से जोड़ती है। पत्तियों के किनारों पर अपनी नुकीली चोंच से कई छेद करती है। फिर इन में धागे पिरोती है। हाँ, धागे के सिरे पर गाँठ लगाना वह नहीं भूलती। धागा बनाती है सेलम की रुई या रेशम के कोयों से। और इसे मज़बूत करने के लिए मकड़ी के जाले को इस पर सानती है।

अलविदा!

सर एडमण्ड हिलेरी

20 जुलाई 1919 -11 जनवरी 2008

29 मई 1953 का यादगार दिन। एडमण्ड हिलेरी और शेरपा तेन्ज़िंग नॉर्गे माउंट एवरेस्ट के शिखर पर चढ़ने वाले पहले व्यक्ति बने।

अगले अंक में ....

वे सिर्फ एक पर्वतारोही नहीं थे.... !